www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ० प्र०)

२००६

मूल्य : ३-०० रुप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विषय-सूची

		पृष्ठ
१.	इक्कीसवी सदी का गंगावतरण	३
२.	सदुपयोग न हो पाने की विडंबना	४
३.	आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता	५
४.	प्रयोग का शुभारंभ और विस्तार	६
५.	प्रखर प्रेरणा का जीवंत तंत्र	८
६.	लोक सेवी कार्यकर्ताओं का उत्पादन	६
७.	विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय	११
८.	घर-घर अलख जगाने की प्रक्रिया दीप यज्ञों के माध्यम से	१२
६.	संधि वेला एवं इक्कीसवीं सदी का अवतरण	१३
१०.	भावी संभावनाएँ—भविष्य कथन	१५
११.	२१वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री	१७
१२.	इस पूर्णाहुति के सत परिणाम	२०
१३.	शिक्षण सत्र व्यवस्था	२१
१४.	अपने समय का महान आंदोलन-नारी जागरण	२२
१५.	विचार क्रांति—जनमानस का परिष्कार	२५
१६.	सृजन प्रयोजनों के निमित्त समय दान	२६
१७.	दैवी सत्ता का सूत्र संचालन	२८

मुद्रक :

युग निर्माण प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ० प्र०)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इक्कासवा सदा का गगावतरण

पिछले तीन सौ वर्षों में भौतिक विज्ञान और प्रत्यक्षवादी ज्ञान का असाधारण विकास-विस्तार हुआ है। यदि उपलब्धियों का सदुपयोग न बन पड़े, तो वह एक बड़े दुर्भाग्य का कारण बन जाता है। यही इन शताब्दियों में होता रहा है। फलस्वरूप हम, अभावों वाले पुरातन काल की अपेक्षा कहीं अधिक विपन्न एवं उद्विग्न परिस्थितियों में रह रहे हैं।

वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, घातक विकिरण, बढ़ता तापमान, आणविक और रासायनिक अस्त्र-शस्त्र ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर रहे हैं, जिसमें मनुष्य के अस्तित्व की रक्षा कठिन हो जाएगी। ध्रुव पिघलने लगें, समुद्रों में भयंकर बाढ़ आ जाए, हिमयुग लौट पड़े, पृथ्वी के रक्षा कवच ओजोन में बढ़ते जाने वाले छेद, पृथ्वी पर घातक ब्रह्मांडीय किरणें बरसाएँ और जो कुछ यहाँ सुंदरं दीख रहा है, वह सभी जल भुन कर खाक हो जाए—ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले विज्ञान-विकास को किस प्रकार सराहा जाए ? भले ही उसने थोड़े सुविधा साधन बढ़ाएँ हों।

इसे विज्ञान-विकास से उत्पन्न हुआ उन्माद ही कहना चाहिए, जिसने इसी शताब्दी में दो विश्व युद्ध खड़े किए और अपार धन-जन की हानि की। छिटपुट युद्धों की संख्या तो इसी अवधि में सैकड़ों तक जा पहुँचती है। धरती की समूची खनिज-संपदा का दोहन कर लेने की भी योजना है। अंतरिक्ष युद्ध का वह नियोजन चल रहा है, जिससे धरती और आसमान पर रहने वाले प्राणियों, वनस्पतियों का कहीं कोई नाम निशान ही न रहे।

प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन ने आत्मा, परमात्मा, कर्मफल, नैतिकता,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसके लिए कितनी ही प्रवंचना और निष्ठुरता क्यों न अपनानी पड़े। लगता है वर्तमान की विचारधारा मनुष्य को पशु बताने जा रही है, जिस पर मर्यादाओं और वर्जनाओं का कोई अंकुश नहीं होता।

विनोद का प्रमुख माध्यम कामुकता ही बन चला है, जिसने नर-नारी के बीच बचे हुए मर्यादाओं के पुल को तो विखंडित किया ही है, यौनाचार की प्रवंचना में भी उलझा दिया है। कारण सामने है। गर्भ निरोध के प्रयत्न चलते रहने पर भी जनसंख्या इस तेजी से बढ़ रही है कि भावी पीढ़ी के लिए खाद्य, निवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि का प्रबंध मुश्किल हो जाएगा और सड़कों पर चलने के लिए गाड़ियाँ तक बंद करनी पड़ेंगी। इस अभिवृद्धि के रहते, विकास के निमित्त बन रही योजनाओं में से एक के भी सफल होने की संभावना नहीं है। भूखे भेड़िये आपस में ही एक दूसरे को चीर-फाड़ डालते हैं। बढ़ी हुई जनसंख्या की स्थिति में मनुष्य भी उसी स्तर तक गिर सकता है।

सदुपयोग न हो पाने की विडंबना

प्रगति के नाम पर जो पाया गया था, यदि उसका सदुपयोग सत्प्रयोजन के लिए सर्वजनीन हित साधन के लिए किया गया होता, तो आज दुनियाँ कितनी सुंदर और समुन्नत होती, इसकी कल्पना सहज ही हो सकती है। पर दुर्भाग्य तो देखिये, जिसने समझदार कहलाने वालों को संकीर्ण स्वार्थपरता की जंजीर में कसकर बाँध लिया और जो हाथ लगा उसे दुरुपयोग करने के लिए ही प्रेरित किया; फल सामने है। क्या गरीब क्या अमीर, सभी साधनों की दृष्टि से असंतुष्ट हैं और कुबेर जैसे वैभववान बनना चाहते हैं। मिल बाँटकर खाने की किसी को इच्छा नहीं। एक दूसरे का शोषण-दोहन करने के लिए ही आतुर हैं और निरंतर चिंतित असंतुष्ट, उद्विग्न और आकुल-व्याकुल बने रहते हैं। ऊपर की चमक देखकर प्रगति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मरघट के भूत-पलीतों की तरह आशंकाओं और उद्विग्नताओं के बीच डरता-डराता जीवन जीता है। यह समूचा जाल-जंजाल मात्र भ्रांतियों के समुच्चय पर आधारित है। यदि सही विचार करने और सही जीवन जीने की कला समझी और अपनाई गई होती, तो आज संसार में सर्वत्र प्रगति, प्रसन्नता और सुख शांति का वातावरण ही बिखरा पड़ा होता। स्नेह, सौजन्य, सद्भाव और सहयोग के वातावरण में, यहाँ हर किसी को उल्लास और आनंद का ही अनुभव होता रहता।

इसके विपरीत आज सर्वत्र अनाचार का ही बोलबाला दीखता है। जो शांति और संतोष पूर्वक जी रहे हैं, वे अँगुलियों पर गिने जाने जितनी स्वल्प संख्या में ही हैं। कुकृत्य, कुविचारों की ही देन है। विक्षोभ, भ्रांतियों से ग्रसित होने पर ही सताता है। आज की प्रमुख समस्या है—विचार विकृति, आस्था संकट, भ्रांतियों का घटाटोप और कुविचारों का साम्राज्य। इस जड़ को काटे बिना काँटों की तरह बिखरे कष्टों से छुटकारा नहीं मिलेगा। विषवृक्ष को काटे बिना सुख शांति की आशा कैसे की जा सकेगी ?

आज की सबसे प्रमुख आवश्यकता

इन दिनों सबसे बड़ा, और सबसे आवश्यक कार्य यह है कि विचार क्रांति का व्यापक आयोजन किया जाए। अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष खड़ा किया जाए और मानवी गरिमा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन और वर्जनाओं का अनुशासन अपनाने के लिए हर किसी को बाधित किया जाए। नवयुग के अवतरण का—सतयुग की वापसी का यही एक मात्र उपाय है, जिसे संसार के समस्त युगों और क्षेत्रों पर लागू किया जाना चाहिए। यही है धर्म की धारणा और सत्य, प्रेम, न्याय की आराधना। इससे बड़ा कोई पुण्य-परमार्थ और दूसरा हो नहीं सकता। यही है वह महाभारत जिसके लिए महाकाल ने प्रत्येक प्राणवान को कटिबद्ध होने के लिए पुकारा है। यह मोर्चा जीतने ही उज्ज्वल भविष्य की संरचना में तनिक भी संदेह रह नहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कर दुर्लभ न रहेगी। हर किसी को उससे लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा।

हमें व्यापक विचार क्रांति की तैयारी करनी चाहिए। समझदारों के सिर पर चढ़ी हुई नासमझी का उन्माद उतरना चाहिए। इसके लिए लोहे से लोहा काटने की, काँटे से काँटा निकालने की नीति अपनानी पड़ेगी। सद्विचारों का इतना उत्पादन और वितरण करना पड़ेगा कि शोक, संताप कहीं ढूँढ़े भी न मिले।

कार्य बड़ा है—व्यापक है। ६०० करोड़ मनुष्यों की "ब्रेन वाशिंग" का प्रश्न है। उसमें अवांछनीयता की गरदन काटने के साथ-साथ, मानवी गौरव के अनुरूप उदारता से भरी-पूरी विवेकशीलता की स्थापना की जानी चाहिए। एकता और समता की छत्रछाया में आने के लिए हर किसी को आमंत्रित ही नहीं बाधित भी किया जाना है।

इसके लिए शुभारंभ कैसे और कहाँ से हो ? यह बिल्ली के गले में घंटी बाँधने जैसा टेढ़ा प्रश्न है। इसके लिए आत्मदानी, प्रचंड साहस के धनी प्राणवान चाहिए। उन्हें कहाँ से ढूँढ़ा जाए ? कौन उनमें प्राण फूँके, कौन उन्हें जुझारू संकल्पों से ओत-प्रोत करे ? चारों ओर दृष्टि पसारने के उपरांत एक यही उपाय सूझा कि—"खोज घर से आरंभ करनी चाहिए।" दशरथ ने विश्वामित्र की याचना पर अपने ही पुत्र सुपुर्द किए थे। गुरु गोविंद सिंह के पाँचों पुत्र अग्रगामी बने थे। हरिश्चंद्र ने स्वयं ही गुरु की आवश्यकता पूरी की थी। यह परंपरा आज फिर जीवित जागृत किए जाने की आवश्यकता है। अपना उदाहरण प्रस्तुत करके ही दूसरों को आदर्शवादिता अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रयोग का शुभारंभ और विस्तार

इस तथ्य को युग निर्माण मिशन के संस्थापक पूज्य आचार्य

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किया कि वे भी लोभ, मोह और अहंकार के बंधन शिथिल करके जो समय, श्रम, कौशल, मनोयोग बच सके, उसे लोक मंगल की युग आवश्यकता, विचारक्रांति के लिए यथा संभव नियोजित करें।

पंद्रह वर्ष की आयु से लेकर ८० वर्ष की आयु तक उन्होंने यही काम अपनाया है। अपना, आदर्श प्रस्तुत करते हुए, संपर्क क्षेत्र के हर परिजन को अपेक्षाकृत अधिक उत्कृष्टता अपनाने और आदर्शवादी मार्ग पर चलने के लिए उत्साहित किया है। यह कार्य उन्होंने एक अध्यापक के रूप में किया है। हिंदी की 'अखंडज्योति', 'युग निर्माण योजना' पत्रिका तथा सात अन्य भारतीय भाषाओं में छपने वाली पत्रिकाओं द्वारा उन्होंने मात्र वाचन की सामग्री नहीं दी; वरन् पाठकों के अंतरालों को इस सीमा तक झकझोरा है, कि वे युग समस्याओं से जूझने के लिए अपना योगदान किसी न किसी रूप में प्रस्तुत करें ही। इन दिनों उनके द्वारा संपादित, प्रकाशित पत्रिकाओं की संख्या लाखों में है। हर अंक को न्यूनतम पाँच व्यक्ति निश्चित रूप से पढ़ते हैं। इसलिए उनसे लाभ उठाने वालों की—मिशन के साथ आत्मीयता स्थापित करने वालों की संख्या बहुत बड़ी हो जाती है! इसी जन शक्ति के माध्यम से, विचारक्रांति के शुभारंभ से लेकर इक्कीसवीं सदी के गंगावतरण तक की विशालकाय योजनाएँ बनायीं और सक्रिय क्रियान्वयन की स्थिति तक पहुँचाई गई हैं।

एक से पाँच, पाँच से पच्चीस का अपना विस्तार तंत्र है। पाँच लाख स्थायी सदस्यों के पच्चीस लाख पाठक हैं। इनमें से प्रत्येक को अपने पाँच-पाँच साथी और तैयार करने का भार सौंपा गया है। इस प्रकार यह प्रयास, दूसरी छलांग में ही एक करोड़ के करीब प्राणवानों एवं सृजन शिल्पियों को समेट लेने की संभावनाओं से भरा पूरा है। यही क्रम बढ़ते-बढ़ते संसार भर के ६०० करोड़ मनुष्य को अपनी भुजाओं में जकड़ ले, तो किसी को भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए और न इस अपेक्षा के प्रति अनास्था ही व्यक्त करनी चाहिए। इसका बढ़ता हुआ परिकर यदि युग परिवर्तन का वातावरण बनाकर खड़ा कर दे, तो इसमें अनहोनी जैसी कोई बात नहीं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

प्रखर प्रेरणा का जीवंत तंत्र

जन मानस के परिष्कार के लिए सशक्त लेखनी और वाणी की आवश्यकता तो है ही, इसके साथ ही ऐसा व्यक्तित्व भी चाहिए, जो अपना उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, अन्यान्यों को युग के अनुरूप अपने विचारों और कार्यों में आवश्यक परिवर्तन के लिए प्रेरित कर सके। यह तीनों ही कार्य मिशन के सूत्र संचालक ने अपने समर्थ जीवन काल में पूरी तरह संपन्न किए हैं। समय, श्रम और मनोयोग का एक-कण भी अभीष्ट लक्ष्य के अतिरिक्त और किसी काम में खर्च नहीं किया।

प्रत्यक्ष है कि लगभग सभी आर्ष ग्रंथों का संस्कृत से हिन्दी अनुवाद आचार्य जी ने किया है। चारों वेद, १०८ उपनिषद्, छहों दर्शन, चौबीसों गीतायें, स्मृतियाँ, ब्राह्मण आरण्यक आदि ग्रंथों के अध्ययन, अनुवाद करने और उन्हें सर्व साधारण तक पहुँचाने में अथक एवं सफल परिश्रम किया है। लगभग १५०० पुस्तकें ऐसी लिखी हैं, जो व्यावहारिक जीवन में अध्यात्म सिद्धांतों के समावेश का, सरल एवं अनुभव भरा मार्गदर्शन करती हैं। इन दिनों आठ मासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन की बात पहले ही बताई जा चुकी है। इस साहित्य का अनुवाद और प्रकाशन हुआ है सो अलग। बाजारू मूल्य पर साहित्य खरीदना इन दिनों सर्व साधारण के वश की बात नहीं है। इसलिए लगभग लागत मूल्य पर उसका प्रकाशन और झोला पुस्तकालयों एवं ज्ञान-रथों के माध्यम से उसे घर-घर पहुँचाने का प्रयास अपने ढंग का अनोखा है। प्राणवान परिजन घर-घर जाकर शिक्षितों को युग साहित्य बिना मूल्य पढ़ने के लिए देते हैं और पढ़ लेने पर वापिस ले आते हैं। बिना पढ़ों को सुनाते हैं। इसी सिलसिले में कुछ साहित्य बिकता भी रहता है और घरेलू पुस्तकालय बनाने की लंबी श्रृंखला चलती रहती है।

जन-मानस के परिष्कार की विचार क्रांति संपन्न करने के लिए, दूसरा उपाय है—वाणी, अर्थात् संगीत और प्रवचन। इसके लिए शांतिकुंज में ऐसी सत्र श्रृंखला निरंतर चलती रहती है जिसके हर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सत्र में हजारों लोग आते हैं और उपरोक्त दोनों ही विधाओं को सीखकर जाते हैं। उन्हें यह विशेष रूप से सिखाया जाता है कि गिरों को उठाने का दायित्व लेने वाले को अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत और साहसी होना चाहिए। मार्गदर्शक का निजी व्यक्तित्व, लेखनी-वाणी से अधिक सशक्त है। यदि वह ढीला-पोला या गया गुजरा होता, तो अभीष्ट उद्देश्य पूर्ण होने के स्थान पर उपहास और कौतुक ही पैदा होता। सूत्र संचालक से मिली प्रेरणा के कारण ही अब तक इस प्रशिक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत, शांतिकुंज ने प्रायः एक लाख युग शिल्पियों को कार्य क्षेत्र में उतारा है।

इन कार्यकर्ताओं की अपनी गतिविधियाँ, योजनाबद्ध रूप से अपने निकटवर्ती कार्य क्षेत्र में निरंतर चलती रहें, इसके लिए संस्था द्वारा जगह-जगह छोटे-बड़े आश्रम बना दिए गए हैं, जिन्हें 'प्रज्ञापीठ' नाम दिया जाता है। इसकी संख्या कुछ दिन पूर्व तक ढाई हजार के करीब थी, अब वह बढ़ते-बढ़ते तीन हजार तक पहुँच चुकी है। वे संस्थान अपनी व्यवस्था अंशदान और समयदान देकर स्वयं चला लेते हैं।

लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं का उत्पादन

जन जागरण के लिए शांतिकुंज से प्रचार टोलियाँ देश भर में भेजी जाती हैं जिनके द्वारा बड़ी संख्या में उपस्थित जनता को अपना जीवनक्रम बदलने के लिए मर्मस्पर्शी उद्‌बोधन दिया जाता था। अब माँग और आवश्यकता बहुत अधिक बढ़ गई है। वैसे प्रशिक्षित प्रचारक हर क्षेत्र में बनते और बसते ही जाते हैं। वे अपने संपर्क क्षेत्र में हर दिन दो चार घंटे मन लगाकर जन संपर्क साधते और उल्टी दिशा में बहने वाले प्रवाह को उलटकर सीधा करने के लिए अपनी सामर्थ्य भर प्रयत्न करते रहते हैं।

उपरोक्त प्रचार प्रक्रिया के अतिरिक्त बड़ी बात है—समर्पित कार्यकर्त्ताओं का नव सृजन के लिए जीवन दान। यह नियोजन अति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उलझा है, कि उसे युग क्रांति जैसे परमार्थ प्रयोजनों में न तो रुचि है और न अवकाश। हर क्षेत्र में वेतन भोगी ही काम करते दीखते हैं। पर जहाँ तक भाव संवेदनाओं में आदर्शवादिता को कूट-कूट कर भरने का सवाल है, वहाँ साधु-ब्राह्मण, परिव्राजक, वानप्रस्थ स्तर के निस्पृह कार्यकर्त्ता चाहिए; अन्यथा वे जन साधारण की श्रद्धा एवं आदर्शवादी कार्यों के लिए उनका सहयोगी न पा सकेंगे।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, शांतिकुंज का प्रयास स्वावलंबी लोकसेवी तैयार करने का है। परिवार में श्रमदान तथा कुटीर उद्योगों के माध्यम से आजीविका चलाते रहें। कभी ऐसी परंपरा रही भी है। ब्राह्मण परिवारों में से एक परिव्राजक लोक मंगल के लिए समर्पित किया जाता था। क्षत्रिय, हर परिवार पीछे एक सैनिक दिया करते थे। सिख धर्म में भी परिवार पीछे एक व्यक्ति गुरु कार्यों के लिए समर्पित किया जाता था। इस परंपरा ने ही उन कार्य क्षेत्रों को उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ प्रदान की हैं। अब वह सब कुछ लुप्त हो गया। शांतिकुंज ने उपरोक्त परंपरा को 'वानप्रस्थ परंपरा का पुनर्जीवन' के रूप में आरंभ किया है और वह निरंतर बढ़ती जा रही है।

शांतिकुंज परिसर के क्षेत्र में ही इन दिनों प्रायः १५०० व्यक्ति निवास करते हैं। इनमें से अधिकांश उच्च शिक्षित हैं, जो अपनी अच्छी खाशी आजीविका को छोड़कर समर्पित भाव से आश्रम में आए हैं और नित्य दस घंटे श्रमदानी स्वयं सेवक की तरह काम करते हैं। आश्रम में न कोई सफाई कर्मचारी है, न धोबी, न नाई, न पहरेदार। इस प्रकार की आवश्यकताएँ कार्यकर्ता ही मिलजुल कर पूरी कर लेते हैं। जिनके पास निज की आर्थिक व्यवस्था है, वे उससे गुजारा करते हैं। जिनके पास वह नहीं है, वे आश्रम से ब्राह्मणोचित आजीविका लेकर, मितव्ययिता भरा जीवन आत्मिक उल्लास पूर्वक जीते हैं। आध्यात्मिक साम्यवाद का यह व्यावहारिक उपयोग देखते ही बनता है। लोग कहते सुने गए हैं कि व्यावहारिक साम्यवाद किसी को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

समान' 'नर और नारी एक समान' का उद्घोष पूरी तरह चरितार्थ होते देखा जा सकता है।

इक्कीसवीं सदी की अनिवार्य आवश्यकताओं को देखते हुए इसी वर्ष यह संकल्प लिया गया है कि युग संधि के इन बारह वर्षों में एक लाख लोकसेवी प्रशिक्षित किए जाएँगे और विभिन्न प्रयोजनों से संबंधित कार्य क्षेत्र में उतारे जाएँगे। इसके लिए स्थानों की आवश्यकता देखते हुए, उनके लिए नए भवन निर्माण की योजना चल पड़ी है। आशा की गयी है यही आश्रम कुछ ही समय में प्रायः दूना कलेवर विस्तृत कर लेगा।

शांतिकुंज की अर्थव्यवस्था परिजनों के स्वेच्छा सहयोग से चलती है। मिशन के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए परिजन बिना माँगे स्वेच्छा-श्रद्धा से जो सहयोग भेज देते हैं, उसी से मितव्ययिता पूर्वक निर्वाह हो जाता है। इन स्वेच्छा सहयोगियों में अधिकांश ऐसे हैं, जो दस पैसा नित्य जितनी सहायता ही प्रस्तुत कर पाते हैं। विनोबा का मत था कि किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए, जब तक कि उसकी उपयोगिता अनुभव करने वाले उसे अंतःप्रेरणा से सींचते रहें। इसी आदर्श का निर्वाह करते हुए शांतिकुंज ने अब तक का अभिनव कार्य चलाया है। भविष्य की बड़ी योजनाएँ भी इसी आधार पर पूरी होती रहेंगी।

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

शांतिकुंज की गतिविधियों में एक बड़ा काम है अध्यात्म का विज्ञान के आधार पर नए सिरे से प्रतिपादन। अब तक शास्त्र उल्लेख और आप्त वचन ही अध्यात्म सिद्धांतों का प्रतिपादन करते थे; पर अब बुद्धिवाद को प्रमुखता मिलने लगने से, तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण आदि की अपेक्षा की जाने लगी है। शांतिकुंज का ब्रह्मवर्चस् आश्रम इसीलिए विनिर्मित हुआ है। उसकी प्रयोगशाला में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गया है कि उसके माध्यम से चलने वाली शोध, नई पीढ़ी की दृष्टि में आदर्शवादी तत्त्वदर्शन को प्रामाणिक सिद्ध कर सके।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के अंतर्गत जड़ी-बूटी विज्ञान की शोध का एक ऐसा विभाग आरंभ किया गया है, जिसे आयुर्वेद का जीर्णोद्धार भी कह सकते हैं।

इन शोध कार्यों में उन विषयों के विशेषज्ञ और पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के कितने ही कार्यकर्ता संलग्न रहते हैं। इस प्रयोगशाला में एक विभाग और जोड़ा गया है, ताकि मनुष्य की शारीरिक और मानसिक जीवनी शक्ति आँकी जा सके और उसका उपयोग उच्चस्तरीय प्रयोजनों में करने का मार्ग दर्शन किया जा सके।

घर-घर अलख जगाने की प्रक्रिया दीप यज्ञों के माध्यम से

मिशन का कार्य क्षेत्र असीम है। उसके लिए देश-देशांतरों में नगर, कस्बों, गाँवों, मुहल्लों, घरों में जाना पड़ेगा और संपर्क साधने के लिए जनसाधारण को छोटे बड़े सम्मेलनों के रूप में एकत्रित करते रहने की आवश्यकता पड़ती रहेगी। साथ ही यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि वे भावनाशील, श्रद्धालु प्रकृति के उदारचेता मानस के हों। ऐसे सम्मेलन व समारोहों की आवश्यकता गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले पड़ेगी, जिससे हर क्षेत्र में नए युग का, नव जागरण का, नए परिवर्तन का संदेश पहुँचाया जा सके।

आजकल सम्मेलन-समारोहों में जनता की अरुचि बढ़ जाने से बड़ी संख्या में लोगों को एकत्रित करना कठिन पड़ता है, विशेष रूप से श्रद्धावानों को। इस कठिनाई का नया हल निकाल लिया गया है—"दीप यज्ञ" प्रक्रिया के माध्यम से। पुरातन विधि-विधान के अनुसार यज्ञ आयोजन में ढेरों पैसा खर्च होता है, ढेरों खाद्य पदार्थ जलते हैं, कर्मकांडों में ढेरों समय खर्च होता है। पुरोहित लोगों का कथन ब्रह्म वाक्य मानकर अपनाना पड़ता है। उनमें बहुत-से लोग अश्रद्धा वश पहुँच भी नहीं पाते हैं। जो पहुँचते हैं वे टिकते नहीं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आयोजकों पर अनेक आक्षेप लगते हैं, फलतः संगठन के स्थान पर आयोजनों में विघटन पैदा हो जाता है।

इन कठिनाईयों को देखते हुए युग धर्म के अनुरूप "दीप यज्ञ" की परंपरा प्रचलित की गई है। वह व्यापक, विस्तृत, सुलभ और स्वल्प साधनों में बन पड़ने के कारण उन सभी उद्देश्यों में सफल हुए हैं, जिनके निमित्त प्राचीन काल में यज्ञ किए जाते थे।

हर याजक अपनी थाली पर पाँच अगरबत्ती और एक दीपक लेकर आता है। सभी वर्ग के नर-नारी पंक्तिबद्ध होकर बैठते हैं। सामूहिक गायत्री मंत्रोच्चारण होता है, साथ ही संगीत और प्रवचन के माध्यम से वह सब बताया जाता है कि स्थानीय लोगों को किस प्रकार प्रगतिशीलता के पथ पर चलना चाहिए और वर्तमान प्रचलनों में से किसमें क्या सुधार करना चाहिए ? बाद में उपस्थित प्रतिभावानों का एक प्रज्ञा मंडल बना दिया जाता है।

प्रातःकाल यज्ञ, दोपहर में विचार गोष्ठी करने की और सायं सभा-सम्मेलन होने की विधा ने जन जागृति के क्षेत्र में असाधारण कार्य किया है और सर्वतोमुखी प्रगति का उत्साहवर्धक वातावरण तैयार किया है। अगले दिनों इसी प्रक्रिया को अपना कर हर गाँव-नगर में पहुँचने और हर व्यक्ति से संपर्क साधने का निश्चय किया गया है। हर वर्ष इस प्रकार के आयोजन समारोह, कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से हजारों की संख्या में संपन्न हो जाते हैं। उससे लाखों लोगों का मन प्रगतिशीलता के साथ जोड़ने का अवसर मिलता है। युग संधि के इन १२ वर्षों में इस प्रक्रिया को देश विदेशों में अत्यधिक व्यापक बनाने की योजना है।

❐ ❐

संधिवेला एवं इक्कीसवीं सदी का अवतरण

बीसवीं सदी का अंत और इक्कीसवीं सदी के आरंभ का मध्यवर्ती अंतर बारह वर्ष का माना गया है। सन् १९८९ से २०००

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और दिनमान का अरुणोदय जब मिलते हैं, तो उसे संधि या संध्याकाल कहा जाता है। इस अवधि का अत्यधिक महत्त्व होता है। पक्षी चहचहाते, फूल खिलते और सभी प्राणी तंद्रा छोड़कर अपने-अपने कार्य में उत्साहपूर्वक निरत होते हैं। उपासना जैसे, कृत्यों का भी यही उपयुक्त समय माना जाता है। समझा जाना चाहिए कि युग संधि के बारह वर्ष अत्यंत महत्त्वपूर्ण संभावनाओं से भरे-पूरे हैं। इसमें पिछले तीन सौ वर्षों से चली आ रही अवांछनीयताओं का प्रायश्चित होगा और सुखद संभावनाओं से भरी-पूरी इक्कीसवीं सदी का बीजारोपण भी इन्हीं दिनों होगा। अवांछनीयताओं के समापन और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन की दुहरी प्रक्रिया इन्हीं दिनों पूरे जोर शोर से चलेगी।

घड़ी का पेंडुलम एक सीमा तक ही आगे बढ़ता है, फिर उसे वापिस लौटना पड़ता है। प्रकृति का नियम है कि वह अतिवाद किसी का भी सहन नहीं करती। सृष्टि ने नियंत्रण और संतुलन का नियम भी बनाया है। पिछले तीन सौ वर्षों में मनुष्य ने हर क्षेत्र में उद्दंडता अपनायी है। उसका प्रतिफल मिलना ही है। नियंता न तो इस पृथ्वी का सर्वनाश सह सकता है और न उसे यही अभीष्ट है कि मनुष्य अपनी गरिमा का परित्याग कर, नर पशु या नर पिशाच जैसा आचरण अपनाकर सृष्टा को कलंकित करे। असंतुलन, विनाश का बीज बोता है। इसलिए प्रकृति समय रहते अनर्थ को रोक देती है और शाश्वत सौजन्य को उसके नियत स्थान पर विराजमान करा देती है।

इक्कीसवीं सदी में अब तक बिखेरी गई गंदगी की सफाई होने जा रही है। तूफानी अंधड़ कूड़े कचरे को उड़ाकर कहीं से कहीं पहुँचाने वाला है; ताकि सुंदरता और सुव्यवस्था अपने स्थान पर अक्षुण्ण बनी रहे। दिव्यदर्शी यह अनुभव करते रहे हैं कि बीसवीं सदी के अंत तक अवांछनीयताएँ अपना पसारा सिमेट लेंगी और इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य को आंचल में लपेटकर स्वर्ग से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भावी संभावनाएँ—भविष्य कथन

इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं से भरी है। उसमें समता और एकता का बोलबाला होगा। यह स्फुरणा मूल चेतना संपन्न विशिष्ट व्यक्तित्वों के अंतःकरण में चिरकाल से प्रस्फुटित होती रही है। कुछ विश्वविख्यात भविष्यविद संसार के विभिन्न भागों में ऐसे हो चुके हैं, जिन्होंने विश्व-समस्या और उनके बदलाव के संबंध में बहुत कुछ कहा है और वह प्रायः समय पर सही सिद्ध होता रहा है। अब से कोई चार सौ पचास वर्ष पूर्व फ्रांस में एक नोस्ट्रोडेमस नामक व्यक्ति हुए थे। उन्होंने अब तक की घटी विश्व घटनाओं के संबंध में बहुत कुछ कहा है और वह कथन हर कसौटी पर खरा उतरा है। उन्होंने सन् २००० के उपरांत आने वाले समय को 'एज ऑफ ट्रूथ' के नाम से वर्णित किया है और नव संरचना में भारत की प्रमुख भूमिका होने का उल्लेख किया है। उसकी पुस्तक पर एक सुविस्तृत व्याख्या लिखते हुए, जॉन हॉग नामक मनीषी ने एक नया ग्रंथ लिखा है—'नोस्ट्राडेमस एंड दि मिलेनियम'। उसमें भारत के संदर्भ में उनके कथन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि एक नई चेतना का उद्भव सन् १९९० से आरंभ होने जा रहा है, जो समस्त विश्व को प्रभावित करेगी; किंतु उदित भारत से होगी।

डॉ० मार्गरिट मीड, हरमन कॉन, पीटर हरकोस, विलियम जैसे विश्वविख्यात भविष्य वक्ताओं ने भी ऐसी संभावनाएँ घोषित की हैं कि इक्कीसवीं सदी में मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान होगा और ऐसी परंपराओं का प्रचलन चल पड़ेगा, जिससे प्रगति और शांति का आधार खड़ा हो सके। प्रो० हरार भी इस विषय के विशेषज्ञ माने जाते हैं। उन्होंने कहा है—"भारत एक विराट् शक्ति के रूप में उभरेगा और उसे नव सृजन के क्षेत्र में अनेक देशों और विशेषज्ञों का समर्थन प्राप्त होगा। जीन डिक्सन की "माई लाइफ एंड प्रोफेसीज" पुस्तक में लिखा है—बीसवीं सदी के अंतिम बारह वर्षों में पाश्चात्य सभ्यता भोगवाद छोड़कर पौर्वात्य सभ्यता की शरण में आएगी। नीति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की विजय होगी। विश्व शांति की स्थापना में भारत की विशेष भूमिका होगी। प्रो० कीरो ने भी ठीक इसी प्रकार का अभिमत व्यक्त किया है।

महामनीषी हक्सले कामा ने अपनी पुस्तक 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' में लिखा है—पिछली सभी क्रांतियों से बढ़कर अगले दिनों एकता और समता स्थापित करने वाली "विश्व क्रांति" उभर कर आ रही है। इसके लक्षण बीसवीं सदी के अंतिम बारह वर्षों में प्रत्यक्ष होने लगेंगे। "इस्लाम भविष्य की आशा" पुस्तक में सैयद कुत्व ने लिखा है कि २१वीं सदी का प्रारंभ धर्म और विज्ञान के समन्वय से होगा। महर्षि अरविंद के अनुसार सन् २००० से पूर्व ही, आत्मबल संपन्न प्रतिभाओं में उत्कृष्ट (सुपर) चेतना का अवतरण होगा, जो व्यक्ति के विचारों में भारी परिवर्तन लाएगी। स्वामी विवेकानंद ने सन् १८६७ में एक भाषण में कहा था कि भारत के प्रज्ञावान आगे आएँगे और वे एकता-समता वाली विश्व संस्कृति को—भारतीय संस्कृति को विश्व भर में फैलाएँगे।

संसार भर में पढ़े जाने वाले प्रतिष्ठित पत्र "टाइम" में लिखा है—भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाले प्रयास अब तेजी से आरंभ हो गए हैं। इसी पत्रिका का २ अप्रैल १६८६ का अंक पूरी तरह भारत को समर्पित किया गया है और लिखा है कि "एक नया नेतृत्व भारत के रूप में उभर रहा है। भारत अपनी आध्यात्मिक विरासत, युवा शक्ति, बुद्धिजीवियों और प्रतिभावानों की प्रचुर संख्या के आधार पर अगले दिनों विश्व का नेतृत्व करेगा।" वाशिंगटन पोस्ट में छपे एक आंकलन के अनुसार, "सूर्य में इन दिनों असाधारण उभार आ रहा है। उनका प्रभाव १६८६ तक असाधारण रूप से प्रकट होता देखा जाएगा। अन्य प्रभावों के अतिरिक्त इस कारण भारत को शीर्ष शिखर पर पहुँचता देखा जा सकेगा।" इसी प्रकार अन्य विशेषज्ञों के मतानुसार भविष्य ध्वंस के निरस्त होने और विकास के समुन्नत होने से संसार में सुखद परिस्थितियाँ उत्पन्न होने का उल्लेख जगह-जगह मिलता है।

जिन दिनों इंग्लैंड पर जर्मनी के लगातार वायुयान आक्रमण की बम वर्षा हो रही थी, उसके कारण उत्पन्न महा ध्वंस को देखते हुए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सर्वत्र बेचैनी और निराशा छाई हुई थी। उन दिनों उस देश के प्रधानमंत्री 'चर्चिल' थे। उन्होंने उसी निराशा के बीच एक नया नारा दिया, जो चप्पे-चप्पे पर अंकित कर दिया गया। नारा था—'वी' फॉर विक्ट्री, जिसका उद्देश्य था कि इंग्लैंड अंततः विजयी होकर रहेगा। जीत हमारी ही निश्चित है। इस उद्घोष ने उस क्षेत्र में एक नया उत्साह भर दिया और लोग पलायन की, निराशा की बात छोड़कर, कठिनाइयों से निपटने के लिए एक जुट हो गए। जीत अंततः मित्र राष्ट्रों की ही हुई।

पिछले तीन सौ वर्षों में हुए शक्ति के असाधारण दुरुपयोग को देखते हुए, इन दिनों भी जन-जन में भावी संभावनाओं के प्रति आशंका और दुःखद समस्याओं की कल्पनाएँ जड़ जमाती जा रही हैं। मनोबल टूटने का दुष्परिणाम सर्वविदित है। स्थिति को देखते हुए इन दिनों सृजनात्मक नया उत्साह उत्पन्न करने और सृजन के लिए जुट पड़ने का वातावरण बनाने की नितांत आवश्यकता है। इस दृष्टि से भी इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य के उद्घोष को अधिकाधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए शांतिकुंज द्वारा जो वातावरण बनाया जा रहा है, उसकी महत्ता समझी जानी चाहिए। विश्वास पूर्वक ऐसे प्रयत्नों को अपनाना चाहिए, जो पिछले दिनों के बिगाड़ की क्षतिपूर्ति अगले ही दिनों कर सकने में समर्थ हो सकें।

२१वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री

शांतिकुंज में युग संधि महापुरश्चरण आरंभ करने का संकेत उतरा है। यह बारह वर्ष तक चलेगा। एक मत के अनुसार बारह वर्ष का एक युग भी होता है। सूक्ष्म जगत में हर बारह वर्ष में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन भी होते हैं। कितनी ही तप साधनाओं का विधान भी ऐसा है जो बारह वर्ष में पूरा होता है। युग संधि भी बारह वर्ष

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और कितने ही सृजनात्मक, सुधारात्मक प्रयोजनों का शुभारंभ परिपू शक्ति का नियोजन करते हुए किया गया है।

नौ दिन के और एक महीने के सत्र इस भूमि में सुनियोजि रूप से चल पड़े हैं, जिनमें साधनात्मक तपश्चर्या का भी समावेश ं और प्रतिभा परिष्कार का प्रशिक्षण तथा प्रेरणा प्रवाह का अनुप समन्वय भी। हर महीने एक मास के सत्र चलते हैं। जिनके पार अवकाश कम है वे नौ दिन में ही इस प्रक्रिया को पूरी कर लेते हैं यह दोनों ही सत्र साधना प्रधान हैं। इनमें शिक्षण की ऐसी व्यवस्थ है, जो व्यक्तित्व को निखारने और प्रतिभा को परिष्कृत करने में काम आ सके।

साधना १२ वर्ष की है, इसलिए लोग सत्रों में इसका शुभारंभ करने के उपरांत, अपने-अपने यहाँ साप्ताहिक सत्संगों के रूप में सामूहिक उपासना का क्रम चलाते हैं। उनमें अधिक से अधिक लोगों को आमंत्रित और सम्मिलित करने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार यह उपक्रम अधिकाधिक विस्तृत होता जाता है। लाखों लोकसेवी इस क्रम में अगले दिनों सक्रिय दिखाई देंगे।

प्राचीनकाल में जनमानस में उत्कृष्टता बनाए रहने के लिए वानप्रस्थ परंपरा चलती रहने से, लोक सेवियों की कहीं भी कमी नहीं पड़ती थी। फिर इन दिनों भी क्या मुश्किल है, जो ज़न कल्याण में निरत होने की महत्त्वाकांक्षा, अनेकानेक उदारचेताओं में उत्पन्न न की जा सके ? बुद्ध और गाँधी के आंदोलनों में सम्मिलित होने वालों की संख्या अनायास ही लाखों में पहुँची थी। अब फिर वैसी ही परंपरा समय की माँग पूरी करने के लिए न चल सके, ऐसी कोई बात नहीं है। विशेषतया तब, जब कि अदृश्य जगत से निस्सृत होने वाले दैवी प्रवाह का उसमें योगदान जुड़ रहा हो। अकेला भगीरथ जब गंगा का अवतरण स्वर्ग से धरती पर कर सकता है, अनेकों अद्भुत प्रतिभाओं का कौशल हर क्षेत्र में अपना चमत्कार दिखा सकता है, तो कोई कारण नहीं कि नव सृजन के लिए युग शिल्पी विनिर्मित करने की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तरह प्रतिभाएँ पुण्य प्रयोजन के हित अनायास ही उभरतीं और निखरती देखी जाती हैं।

इक्कीसवीं सदी को भी दूसरा गंगावतरण ही कहा जा सकता है। इसका उद्गम ढूँढ़ना हो तो गंगोत्री की समता शांतिकुंज से दी जा सकती है। यमुनोत्री से यमुना निकलती है। अमरकंटक से नर्मदा, ब्रह्मपुत्र मानसरोवर से निकलती है। बाद में उनका विस्तार और प्रवाह क्रमशः बढ़ता ही चला गया है। इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष जिस पांचजन्य से अंतरिक्ष को गुंजित करने लगा है, उसे यदि कोई चाहे तो शांतिकुंज भी कह सकता है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्त ऋषियों की तपस्थली के अतिरिक्त, इस भूमि को दिव्य साधनाओं और यज्ञ कृत्यों से पवित्र एवं सशक्त बनाया गया है। दिव्य संरक्षण एवं दिव्य वातावरण की भी यहाँ कमी नहीं है। ऐसे ही अनेक कारणों से दैवी चेतना ने यदि इस आश्रम को युग अवतरण के लिए भगीरथी प्रयत्न करने का कार्यभार सौंपा है तो वह उचित ही है।

अत्यंत व्यस्त, असमर्थ लोगों के लिए एक प्रतीक साधना भी युग संधि पुरश्चरण के अंतर्गत नियोजन की गई है। प्रातःकाल आँख खुलते ही पाँच मिनट की इस मानसिक ध्यान धारणा को संपन्न किया जा सकता है।

अपने स्थान से ध्यान में ही हरिद्वार पहुँचा जाए। गंगा में डुबकी लगाई जाए। शांतिकुंज में प्रवेश किया जाए। गायत्री मंदिर और यज्ञशाला की परिक्रमा की जाए। अखंड दीपक के निकट पहुँचा जाए। कम से कम दस बार वहाँ बैठकर जप किया जाए। माताजी से भक्ति का और गुरुदेव से शक्ति का अनुदान लेकर अपनी जगह लौट आया जाए। इस प्रक्रिया में प्रायः पाँच मिनट लगते हैं एवं महापुरश्चरण की छोटी भागीदारी इतने से भी निभ जाती है। जिसके पास समय है वे गायत्री का जप और सूर्य का ध्यान सुविधानुरूप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह क्रम सन् २००० के अंत तक चलेगा। इस महापुरश्चरण की पूर्णाहुति इक्कीसवीं सदी के आरंभ में सन् २००१ में होगी। आशा की गई है कि उसमें एक करोड़ साधक भाग लेंगे। अधिक व्यक्तियों का एकनिष्ठ, एक लक्ष्य प्राप्ति हेतु जब एकत्रीकरण होता है तो एक प्रचंड शक्ति उत्पन्न होती है। इस पूर्णाहुति का प्रतिफल भी असाधारण एवं चमत्कृतियाँ पूर्ण होना चाहिए। नवसृजन की अनेक धाराएँ उसमें से फूट पड़नी चाहिए और अनेक क्रिया-कलाप समुचित सामर्थ्य के साथ उभरने चाहिए।

इस पूर्णाहुति के सद्परिणाम

सन् १९५८ में गायत्री तपोभूमि मथुरा के तत्त्वावधान में, एक सहस्र कुंडी गायत्री महायज्ञ संपन्न हुआ था, जिसमें चार लाख साधक आए थे। दर्शक तो कुल पंद्रह लाख थे। इन साधकों को सम्मिलित करके प्रायः छै हजार शाखा-संगठन बनाए गए थे और भारत की देव संस्कृति को नवजीवन प्रदान करने का सभी के द्वारा संकल्प लिया गया था। विगत तीस वर्षों में अब तक जो भी महत्त्वपूर्ण नवसृजन कार्य संपन्न हुए हैं, वे उसी के सत्परिणाम हैं। सन् २००१ में जो एक करोड़ साधकों द्वारा व्रतशील पूर्णाहुति होने जा रही है, उसका धक्का पूरे एक सौ वर्षों तक अपनी शक्ति का परिचय देता रहेगा और युग परिवर्तन की प्रतिक्रिया को काल्पनिक नहीं, सर्वथा सार्थक बनाकर रहेगा। इस आयोजन में उपस्थित जनों में से प्रत्येक को नवनिर्माण के लिए वह काम सौंपे जाएँगे, जिन्हें वे अपनी योग्यता और परिस्थिति के अनुरूप करते रह सकें।

इसी अवधि में एक लाख लोकसेवी विनिर्मित प्रशिक्षित कर लेने की बात कठिन एवं असंभव जैसी लगती तो है, पर यदि उसके लिए तूफानी आंदोलन खड़ा किया जा सके और प्रचलन का वैसा ही प्रवाह उगाया जा सके, तो एक को देखकर दूसरा व्यक्ति बुरी ही नहीं, अच्छी परंपराएँ भी अपना सकता है। संसार में कोई भी ऐसा आदमी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

का कुछ न कुछ काम न करता रह सके। बिहार प्रांत के हजारी किसान ने आम के उद्यान लगाए जाने की उपयोगिता समझी और उस कार्य में परिपूर्ण लगन के साथ जुट पड़ा। फलतः उसने अपने जीवनकाल में उस क्षेत्र में गाँव-गाँव घूमकर एक हजार आम्र उद्यान लगवाए। लगन का चमत्कार देखते हुए लोगों ने उस इलाके का नाम हजारी बाग रखा। हजार बागों वाला—हजारी बाग। प्रश्न योग्यता या सुविधा का नहीं, लगन का है। यदि वह सच्चे मन से लगी हो, तो शीरी का प्रेमी फरहाद अकेले पुरुषार्थ से भी बत्तीस मील लंबी नहर पहाड़ों से होकर खोद लाने की चुनौती पूरी कर सकता है। संकीर्ण स्वार्थपरता की जंजीरों में जकड़े हुओं के लिए अपनी तृष्णा पूरी कर सकना भी कठिन है, पर उदारचेता तो ढेरों समय, श्रम और मनोयोग उससे बचाकर, उससे ढेरों महत्त्वपूर्ण कार्य करते रह सकते हैं और अपना इतिहास अमर बना सकते हैं। विश्वास है कि ऐसा ही वातावरण इक्कीसवीं सदी आने से पूर्व बना लिया जाएगा।

शिक्षण सत्र व्यवस्था

प्रतिभा परिष्कार और नवसृजन का राजमार्ग तैयार करने में शांतिकुंज अपने ढंग की अनोखी भूमिका संपन्न कर रहा है, जिसमें युग शिल्पियों का उत्पादन और अभिवर्धन प्रमुख है। कम समय में कम साधनों से अधिक लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए थोड़े-थोड़े समय के प्रशिक्षण सत्र रखने पड़ते हैं। विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए एक महीने के और व्यस्त परिस्थितियों वालों के लिए नौ-नौ दिन के शिक्षण सत्र रखे गए हैं। हर महीने १ से ९, ११ से १९ और २१ से २९ तक यह सत्र संपन्न होते रहते हैं। इनमें सम्मिलित होने के इच्छुक अपना पूरा परिचय भेजकर इच्छित सत्र में सम्मिलित होने की स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। स्थान भर गया हो तो अगले किसी निकटवर्ती सत्र की स्वीकृति मिल जाती है।

शिक्षित, समर्थ, उत्साही और अनुशासन प्रिय वयस्क पुरुषों की ही भाँति उन्हें सुयोग्य महिलाओं को भी सम्मिलित होने की सुविधा है.

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जिनकी गोदी में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे नहीं है। बहुत छोटे बच्चे शिक्षण व्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न करते हैं, माताओं का ही नहीं दूसरे शिक्षार्थियों का भी ध्यान बँटता है। महिलाओं पर बालकों संबंधी प्रतिबंध इसीलिए रखे गए हैं।

अपने समय का महान आंदोलन—नारी जागरण

युग संधि के इन्हीं बारह वर्षों में एक और बड़ा आंदोलन उभरने जा रहा है, वह है—महिला जागरण। इस हेतु, चिरकाल से छिटपुट प्रयत्न होते रहे हैं। न्यायशीलता सदा से यह प्रतिपादन करती रही है कि 'नर और नारी एक समान' का तथ्य ही सनातन है। गाड़ी के दोनों पहियों को समान महत्त्व मिलना चाहिए। मनुष्य जाति के नर और नारी पक्षों को समान श्रेय-सम्मान, महत्त्व और अधिकार मिलना चाहिए। इस प्रतिपादन के बावजूद बलिष्ठता के अहंकार ने, पुरुष द्वारा नारी को पालतू पशु जैसी मान्यता दिलाई और उसके शोषण में किसी प्रकार की कमी न रखी। सुधारकों के प्रयत्न भी जहाँ-तहाँ एक सीमा तक ही सफल होते रहे समग्र परिवर्तन का माहौल बन ही नहीं पाया, किंतु यह अनोखा समय है, जिसमें सहस्राब्दियों से प्रचलित कुरीतियों की जंजीरें कच्चे धागे की तरह टूटकर गिरने जा रही हैं। युग संधि के इन वर्षों में भारत की महिलाओं को तीस प्रतिशत शासकीय व्यवस्था में प्रतिनिधित्व मिलने जा रहा है। अगले दिनों हर क्षेत्र में उनका अनुपात और गौरव भारत में ही नहीं विश्व के कोने-कोने में भी निरंतर बढ़ता ही जाएगा।

इसी प्रकार अन्य संपन्न देशों में नारी की स्थिति लगभग पुरुष के समान ही जा पहुँची है और वे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में बढ़ चढ़ कर ऐसा परिचय दे रही हैं, जिसे देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि वे पुरुषों से किसी प्रकार पीछे हैं। 'इस्लाम धर्म में नारी पर अधिक प्रतिबंध है; शासन सत्ता उन्हें सौंपने का विधान नहीं है। फिर भी पाकिस्तान की बेनजीर भुट्टो ने प्रधानमंत्री का पद हथिया लिया और एक नई परंपरा को जन्म दिया था।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भारत का नारी जागरण अपने ढंग का अनोखा हुआ। उनका आत्म विश्वास जागेगा। प्रगति पथ पर चलने का मनोरथ अदम्य रूप से उभरेगा। इस बार पुरुषों का रुख बाधा पहुँचाने का नहीं, वरन् उदारतापूर्ण सहयोग देने का होगा।

शांतिकुंज ने निश्चय किया है कि भारत के हर गाँव-नगर में पहुँचकर महिलाओं को भावी संभावनाओं से अवगत कराया जाएगा और उन्हें प्रगतिशील बनाने के लिए उनमें अदम्य उत्साह जगाया जाएगा। इसके लिए प्रथम कार्यक्रम यह हाथ में लिया गया है कि २४ हजार महिला दीप यज्ञ इस प्रकार संपन्न किए जाएँगे कि उनमें देश की अधिकांश महिलाओं को एकत्रित और संगठित किया जा सके। इसके लिए शिक्षित महिलाओं को कमान सँभालने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है, जो अपने-अपने समीपवर्ती क्षेत्र में इस आंदोलन को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने में निरत होंगी।

दीपयज्ञ नितांत सुगम, खर्च रहित और अतीव प्रेरणाप्रद सिद्ध हुए हैं। उनमें परमार्थ श्रद्धा जगाने की प्रक्रिया का भी समुचित समावेश सिद्ध हो चुका है। पिछले दिनों पुरुष प्रधान दीपयज्ञ आशा से अधिक सफल हुए हैं। इस माध्यम से लोगों द्वारा आत्म परिष्कार एवं लोक कल्याण के लिए बढ़-चढ़कर व्रत धारण किए और संकल्प लिए गए हैं। इस वर्ष महिला प्रधान यज्ञों की बारी रहेगी। पुरुष उसमें सहयोगी की तरह सम्मिलित रहेंगे और सफल बनाने में योगदान देंगे। केंद्र से भेजी गई गाड़ियों की अपेक्षा स्थानीय नर नारियों को यह मोर्चा सँभालने के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित और प्रशिक्षित किया जा रहा है। इन आयोजनों के साथ-साथ ही महिला मंडलों का संगठन आरंभ कर दिया जाएगा। एक से पाँच, पाँच से पच्चीस बनने का उपक्रम नव सृजन का आधारभूत सिद्धांत है। इस आधार पर जीवंत-जाग्रत महिलाओं की सुसंगठित टोलियाँ हर क्षेत्र में खड़ी होती दिखाई पड़ेंगी।

महिला आंदोलन अगले ही दिनों दो कार्य हाथ में लेगा। एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

खर्चीली शादियों में महिला समुदाय का असहयोग। परंपरावाद के नाम पर प्रतिगामिताओं ने, मूढ़ मान्यताओं, अंध परंपराओं, कुरीतियों, कुंठाओं ने, नारी समाज को बुरी तरह अपने चंगुल में जकड़ा है। खर्चीली शादियों ने बेटी-बेटे के बीच अंतर की मोटी दीवार खड़ी की है। उसे पूरी तरह गिरा देने का ठीक यही समय है। बहू और बेटी के बीच अंतर खड़ा न करने वाला दृष्टिकोण इस आंदोलन के ही साथ जुड़ा हुआ है। जब उन्हें भावी पीढ़ी का नेतृत्व करना है, तो आवश्यक है कि उन्हें शिक्षित, सुयोग्य, दक्ष एवं प्रगतिशील भी बनाया जाए। २४ हजार यज्ञों के साथ जहाँ महिला संगठन का प्रयोजन प्रत्यक्ष है, वहाँ यह भी उत्साह भरना आवश्यक है कि उन्हें हर दृष्टि से सुयोग्य बनाने में कुछ कमी न छोड़ी जाए।

आशा की गई है कि अगले पाँच वर्षों में एक भी नारी अशिक्षित न रहेगी और खर्चीली शादियों का प्रचलन कहीं भी दृष्टिगोचर न होगा। महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती दिखाई देंगी।

लोकसेवी जीवनदानी, न केवल पुरुषों में उत्पन्न किए जाने हैं; वरन् योजना यह भी है कि बच्चों वाली महिलाएँ अपने निकटवर्ती क्षेत्र में काम करें और जिनके ऊपर बच्चों की जिम्मेदारी नहीं है, वे नारी उत्थान का तूफान उठाने, घर-घर अलख जगाने के लिए, सच्चे अर्थों में देवी की भूमिका संपन्न करके दिखाएँ।

इन दिनों महिला वर्ग में ही साक्षरता संवर्धन का तूफानी आंदोलन जुड़ा रहेगा। साक्षर होते ही उन्हें ऐसा साहित्य दिया जाएगा जो उन्हें नव युग के अनुरूप चेतना प्रदान करने में समर्थ हो। पुरुषों में प्रतिभा संवर्धन आंदोलन चलाने के अतिरिक्त, नारी जागरण का आलोक वितरण करने वाला साहित्य भी आवश्यक है। शांतिकुंज ने उसे देश की सब भाषाओं में उपलब्ध कराने का निश्चय किया है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विचार क्रांति—जनमानस का परिष्कार

छोटा मकान बनाने में, कितने साधन जुटाने पड़ते हैं और कितना ध्यान देना पड़ता है; उसे सभी भुक्त भोगी भली प्रकार जानते हैं। फिर जहाँ खंडहर स्तर की दुनियाँ को नवयुग के भव्य भवन में विकसित करना है वहाँ कितने अधिक कौशल की—कितने साधनों की—कितनी प्रतिभाओं की आवश्यकता पड़ेगी, इसका अनुमान लगाना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए। सुधार और सृजन के दो मोर्चे पर, दुधारी तलवार से लड़ा जाने वाला यह पुरुषार्थ कितना व्यापक और कितना बड़ा होगा, इसका अनुमान लगाने पर प्रतीत होगा कि यह प्राचीन काल के समुद्र सेतु बंधन, लंका दहन, संजीवनी बूटी वाला पर्वत उखाड़कर लाने जैसा कठिन होना चाहिए। इसे गोवर्धन उठाए जाने की उपमा दी जा सकती है और अगस्त्य द्वारा समुद्र को पी जाने जैसा अद्भुत भी कहा जा सकता है। अवतारों द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत किए जाते रहे परिवर्तनों के समकक्ष भी इसे कहा जा सकता है।

पूर्वकाल में संसार भर की आबादी बहुत कम थी। अब से दो हजार वर्ष पूर्व संसार में प्रायः तीस करोड़ व्यक्ति रहते थे। उनमें से एक छोटी संख्या ही उद्दंडों की पनपी थी और तोड़-फोड़ में लगी थी। उस पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए परशुराम ने कुल्हाड़ा उठाया था और जिन्हें बदलना आवश्यक था, उनका सिर (चिंतन) पूरी तरह फेर दिया था। अब संसार की आबादी ६०० करोड़ है। इसमें से अधिकांश जन समुदाय विचार विकृति और आस्था संकट से ग्रसित है। अधिकांश का चिंतन मानवी गरिमा के अनुरूप चल नहीं रहा है। अवांछनीयताएँ हर क्षेत्र पर अपना कब्जा जमाती चली जा रही हैं। इसके लिए विश्व व्यापी विचार क्रांति की आवश्यकता है।

एक प्रयोजन के लिए खड़ी की गई छोटी-मोटी क्षेत्रीय क्रांतियाँ कितनी कठिन पड़ी हैं, इसे इतिहासवेत्ता जानते हैं। अब जन-क्षेत्र में व्याप्त अभ्यस्त दृष्टिकोणों का आमूलचूल परिवर्तन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किया जाना है। यही जनमानस का परिष्कार है। अवांछनीयताओं का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन भी यही है। इसे धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक संपन्न करना इतना बड़ा काम है, जिसके लिए हजारों परशुराम भी कम पड़ेंगे। इतने पर भी यह निश्चित है कि यह भवितव्यता संपन्न होकर रहेगी। शालीनता, आत्मीयता, सद्भावना और सहकारिता का नवयुग अवतरित होकर रहेगा। इस पुण्य प्रवाह को प्रगतिशील करने के लिए असंख्य भगीरथों की आवश्यकता पड़ेगी। ध्वंस सरल है और सृजन कठिन। माचिस की एक तीली समूचे छप्पर और गाँव मुहल्ले को जला सकती है, पर एक राज्य बसाने के लिए तो अनेक समर्थों का कौशल चाहिए।

सृजन प्रयोजनों के निमित्त समयदान

युग संधि के अगले दस वर्षों में शांतिकुंज को कई अति महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न करने हैं। हाथ में लिए गए कार्यों को द्रुतगति से पूरा किया जा रहा है। इस अवधि में एक लाख नए ऐसे नर-नारी लोकसेवी स्तर के विनिर्मित करने हैं, जो पूरा समय न दे सकने की विवशता में, कुछ घंटे नियमित रूप से अपने क्षेत्र में सृजन प्रयत्नों के लिए लगाते रहें। सन् २,००० तक की अवधि में ही इस महा परिवर्तन के एक करोड़ भागीदार बनाए जाने की योजना है, जो युग संधि की पूर्णाहुति में सम्मिलित होकर, अगले दिनों के लिए अपने दायित्वों को व्रतशील होकर धारण कर सकें।

अशिक्षित जनता को इस आधार पर शिक्षित बनाया जाना है कि हर वर्तमान शिक्षित व्यक्ति, औसतन दस अशिक्षितों को शिक्षित बनाने का संकल्प ले और विद्या प्राप्ति के ऋण से उऋण हो। यह आंदोलन शिक्षा संवर्धन का वह कार्य कर सकेगा, जो असंख्य नए स्कूल खोलने और उन पर अपार धन राशि व्यय करने पर भी संभव नहीं। कुप्रचलनों में से विवाह विकृति का निवारण करने के लिए बिना धम-धाम और बिना दहेज जेवर की शादियाँ कराने की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इक्का-दुक्का घटनाएँ ही नहीं घटती रहने देनी हैं, वरन् उस प्रचलन को सामान्य प्रथा बना कर रहना है। इसके साथ ही अन्य कुप्रचलन, अंधविश्वास, अनाचार, घटते और मिटते चले जाएँगे। हर व्यक्ति को नव सृजन प्रयत्नों के लिए कुछ समयदान और अंशदान देते रहने के लिए सहमत कर लिया जाएगा, तो उतने छोटे सहयोग से भी हर क्षेत्र में अनेक सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियाँ भी फलने फूलने लगेंगी।

अशिक्षा की निद्रा से जब दो तिहाई जन समुदाय जागेगा और चेतन स्थिति में पहुँचेगा, तो निश्चय ही उसकी ज्ञान पिपासा बढ़े-चढ़े स्तर की होगी। बौद्धिक क्षुधा उसे आकुल-व्याकुल कर रही होगी। उसकी पूर्ति यदि उपयुक्त युग साहित्य से न हो सकी, तो परिणाम यह होगा कि लोग अभक्ष्य खाने जैसे विकृत साहित्य को अपनाने लगेंगे और उससे भी अधिक घाटा उठाएँगे, जो कि अशिक्षित रहने पर उठा रहे थे। अस्तु आने वाले नवयुग के मनुष्य के लिए, अभिनव साहित्य को हर भाषा में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है। उसकी व्यवस्था अत्यंत विकट एवं बोझिल होते हुए भी पूरी की ही जाएगी।

अभी प्रज्ञा परिजन ही प्रमुख रूप से नव सृजन का आंदोलन जन स्तर पर चला रहे हैं, पर विश्वास किया गया है कि अगले दिनों इस समुद्र मंथन में उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ भी सम्मिलित होंगी। मनीषा के धनी, संपत्तिवान, प्रतिभाशाली, कलाकार, उदारचेता महामानव इसी श्रेणी में आते हैं। उनका दिशा परिवर्तन होगा। आज वे जिस संकीर्ण स्वार्थ साधना में लगे हैं, उससे दस कदम आगे बढ़कर उन कार्यों को हाथ में लेंगे, जिन्हें करने के लिए समय की माँग उन्हें प्रेरित और बाधित करेगी। त्याग करना यों सामान्य जनों के लिए कठिन पड़ता है, पर आड़े समय में मानवी अंतराल में निवास करने वाली अंतः चेतना भी उभरती है और ऐसे प्रयास कराती है, जिनके करने का उन्हें पूर्व अभ्यास न था। बुद्ध काल में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ही उभर पड़ना यह बताता है कि समय की माँग को गूँगे बहरे भले ही न सुनें, पर चेतन एवं सही सलामत व्यक्ति युग धर्म के परिपालन से इनकार कैसे कर सकते हैं ? ऐसे प्राणवानों को झकझोरने और नींद से विरत होकर तन कर खड़े हो जाने की स्थिति उत्पन्न करने में शांतिकुंज का तंत्र अभी से पूरी तैयारी कर रहा है। इक्कीसवीं सदी में उनकी कहीं कोई कमी न रहेगी। उनका उभार तो युग संधि वेला में ही दिखने लगेगा।

हिमालय से अधिकांश नदियाँ निकलती हैं। तुलना करने पर शांतिकुंज को भी ऐसा ही कुछ करते देखा जाएगा, जिसमें कि असंख्यों को दिशा-प्रेरणा के स्रोत उपलब्ध हों। इस जेनरेटर की ऊर्जा से विद्युत-उपकरणों को गतिशील होने की शक्ति मिल सके।

दैवी सत्ता का सूत्र संचालन

विश्वास किया जाना चाहिए कि ऐसे बड़े काम महाकाल के तत्त्वावधान में, उसकी ही विनिर्मित योजना के अनुसार संपन्न होने हैं। वही राई को पर्वत और पर्वत को राई बनाता है। सृष्टा निराकार होने के कारण प्रत्यक्षतः कुम्हार की तरह संरचना करते नहीं देखा जाता। महान् कार्य महान व्यक्तियों के द्वारा संपन्न होते रहे हैं। यह महानता सामान्य मनुष्य की नहीं, उसी महान की योजनानुसार होती है, जो सृजन, परिपोषण और परिपालन के लिए पूरी तरह उत्तरदायी है। वही समय-समय पर धर्म की हानि और अधर्म की बाढ़ को रोकने के लिए अपनी ऊर्जा के अनोखे प्रयोग करता है। मनुष्य जैसा अद्भुत प्राणी जिसने सृजा, जिसके नायकत्व में संसार की सारी व्यवस्था चलती है; वह जो योजना बनाए, वह अधूरी कैसे रहेगी ? उसके संकल्प एवं नियोजन में प्रतिरोध कौन खड़ा करेगा ?

महत्त्वपूर्ण कार्य भगवान करते हैं और उसके श्रेय को शरीरधारी मुफ्त में ही प्राप्त कर लेते हैं। चेतना काम करती है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तिनके भी आकाश चूमते हैं। नदी प्रवाह में बहती हुई टहनी, बिना श्रम के समुद्र में जा मिलने का लंबा सफर पूरा कर लेती है। दैवी सत्ता की सहायता से सुदामा, नरसी, मेहता, विभीषण, सुग्रीव, शबरी, गिलहरी, रीछ वानर आदि ने वह श्रेय उपलब्ध किया था, जिसे वे मात्र अपने बलबूते कदाचित ही कर पाते। वह सत्ता इन दिनों अपनी ओर से उत्सुक और प्रयत्नशील है कि श्रेयाधिकारी आगे आएँ और वह श्रेय प्राप्त करें, जो असंख्यों के लिए प्रेरणाप्रद बने तथा अनंत काल तक अनुकरणीय, अभिनंदनीय समझा जाता रहे।

दिव्य सत्ता का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व अपने ही भीतर है। उसे आत्म परिष्कार और लोक मंगल की साधना द्वारा सहज ही अभीष्ट सहयोग के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। अर्जुन, हनुमान को ऐसा ही दिव्य सहयोग मिला था। असंख्य महामानव इसी आधार पर कृतकृत्य हुए हैं। युग निर्माण योजना द्वारा संपन्न हुए अगणित लोकोपयोगी कार्य किसी व्यक्ति विशेष के पुरुषार्थ से नहीं, वरन् दैवी प्रेरणा और अनुकंपा के आधार पर ही आश्चर्यजनक रूप से विकसित, विस्तृत एवं सफल होते रहे हैं।

शांतिकुंज से सन् १९८९ से लेकर सन् २००० तक की एक सुविस्तृत योजना और कार्य पद्धति विनिर्मित की है। वातावरण में असाधारण उत्साह और साहस भरने का प्रयत्न किया है। आशा की जानी चाहिए कि इसके पीछे दैवी शक्ति का समर्थन होने के कारण अभीष्ट उद्देश्य पूर्ण होकर रहेगा।

इस मिशन के संस्थापक, संचालक अपने ८० वर्ष के जीवन में संपन्न हुए क्रिया-कलापों के पीछे, प्रधान कारण दैवी शक्ति की अनुकूलता एवं अनुकंपा ही मानते हैं। वे कहते हैं कि उनकी सामान्य-सी मनःस्थिति और साधनों को देखते हुए जो कुछ बन पड़ा है वह इतना अधिक है, जिसे गोवर्धन पर्वत उठाने के समतुल्य कहा जा सकता है। साहित्य सृजन, संगठन, सृजनात्मक आंदोलन, प्रज्ञा केंद्रों का हजारों की संख्या में निर्माण जैसे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सर्वविदित कार्य ही ऐसे हैं, जिनका ब्यौरा जानने पर सहज ही यह विश्वास नहीं होता कि इतना कुछ एक व्यक्ति द्वारा बन पड़ेगा। वे तथ्य तो एक ही बात का संकेत करते हैं, कि किसी कुशल बाजीगर की अँगुलियों के मार्गदर्शन और सहयोग से ही यह सब बन पड़ा है। अगले दिनों जो इस तंत्र द्वारा किया जाना है, उसकी रूपरेखा समझने पर सहज बुद्धि को यह विश्वास दिलाना कठिन है कि विश्वव्यापी सृजन प्रयोजनों में जितनी प्रतिभाओं और जितने साधनों की आवश्यकता है, उनकी व्यवस्था हो भी सकेगी ? किंतु वे यह सारे काम पूर्ण करने का निश्चय कर चुके हैं। समस्याएँ इतने प्रकार की, इतनी भारी और व्यापक हैं, जिन्हें सुलझाने में स्थूल शरीर की क्षमता कम पड़ती है। उस महान कार्य को संपन्न करने के लिए सूक्ष्म शक्ति को आधार बनाकर ही बड़े क्षेत्र में बड़ा काम किया जा सकता है। प्रतिभाओं का असाधारण संख्या में उत्पादन करने के संबंध में भी यही बात है। उलटे को उलटकर सीधा करने का व्यापक कार्यक्रम भी इतना ही कठिन है। इसके लिए स्थूल शरीर सहायक नहीं बाधक ही होगा। अस्तु निर्णायक ने वर्तमान स्तर बदल लेने का निश्चय किया है। इसमें अब सीमित समय ही लगने वाला है।

किसी को आशंका यह नहीं करनी चाहिए कि इंजन के बिना रेल कैसे चलेगी। इंजन को समझना हो तो सूत्र संचालक की अदृश्य सत्ता की सामर्थ्य का आंकलन करना चाहिए। जहाँ तक आचार्य जी का संबंध है, वहाँ तक वे बताते हैं कि सन् २००० तक संपन्न किए जाने वाले विशाल योजना क्रम को पूरा करने के लिए उन्होंने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, आवश्यक साधन और स्व-संचालित तेज के गतिशील रहने की व्यवस्था बना दी है। साथ ही विश्वास किया है कि वह सब कुछ उनके न रहने पर भी सुनिश्चित ढंग से चलता रहेगा। अश्रद्धालु इसमें संदेह कर सकते हैं; किंतु महाकाल की क्षमता पर जिन्हें विश्वास है, वे अनुभव करते रह सकते हैं कि जो प्रक्रिया ८० वर्ष से [illegible]

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सफलता प्रदान करती रही है, वह अपने समर्पित अकिंचन को सौंपी हुई जिम्मेदारियों को भी स्वयं संभाल लेगी और जो अभीष्ट है, उसे संपन्न करके रहेगी। संचालक ने तो सन् २००० तक की पत्रिकाओं का संपादन और अगले दिनों छपने वाले साहित्य का सृजन भी कर दिया है। पीछे के लिए ऐसे उत्तराधिकारी छोड़े हैं, जो लक्ष्य को पूरा करने के लिए बड़े से बड़ा कदम उठाने में चूकेंगे नहीं।

पृथ्वी की विकट आवश्यकताओं को देखते हुए, दैवी विधान ने गंगा को स्वर्ग से धरती पर भेजने का पूर्व निश्चय कर रखा था। निमित्त बनने के लिए चूँकि माध्यम की जरूरत पड़ी, तो भगीरथ के रूप में वह सहज ही चला आया। इन दिनों ज्ञान गंगा समस्त विश्व का सिंचन करने और समस्त मानव जाति का कल्याण करने के लिए उतर रही है। स्वेच्छा पूर्वक अथवा नियंता की विधि-व्यवस्था के अनुशासन में, जैसे भी हो, उज्ज्वल भविष्य की संभावना वाली ज्ञान गंगा का अवतरण निश्चित है। उसका स्वागत-अर्चन करने की आवश्यकता की पूर्ति के लिए, क्या असंख्यों भावनाशील पंक्तिबद्ध होकर विशाल सेना की तरह खड़े मिलेंगे ? क्या वे इतने स्वल्प समय में जुट सकेंगे ? जिन्हें महाकाल की इच्छा और योजना के सफल होने का विश्वास है, वे इस प्रतिपादन पर श्रद्धा कर सकते हैं कि राई से पर्वत बनाने वाली शक्ति का नियोजन स्वल्प साधनों और स्वल्प व्यक्तियों के माध्यम से भी संभव है।

सन् २००० में अभी लगभग २ वर्ष शेष हैं। इतने समय में मिशन के सूत्र संचालक अपने स्थूल कलेवर और शक्ति भंडार को व्यापक बनाने के लिए सूक्ष्म शक्ति के माध्यम से इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण यथा समय संपन्न करके रहेंगे। उस अनुग्रह का समय पर सदुपयोग करने के लिए, श्रेयार्थियों को समय रहते कटिबद्ध होने भर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

युग देवता ने हर प्राणवान को इन दिनों लिप्सा और कुत्साओं के बंधन ढीले करके, नव सृजन के दैवी प्रयास में भागीदारी के लिए पुकारा है। वे सफल तो हर हालत में होने वाले हैं। प्रश्न उस सुयोग सौभाग्य का है, जिसे समय पर जागने वाले, आवश्यक साहस दिखाने वाले ही उपलब्ध किया करते हैं।

इक्कीसवीं सदी अपने ढंग की समग्र क्रांति साथ लेकर दौड़ी आ रही है। उसमें संसार का आनंद और उल्लास से भरा नव सृजन होने वाला है। अवांछनीयताओं का दुर्ग ढहने ही वाला है। इस भवितव्यता में सहयोगी बनकर समस्त संसार का तो भला किया ही जा सकता है साथ ही अपने लिए भी उस स्तर का सौभाग्य उपलब्ध किया जा सकता है, जिसके प्रभाव से आने वाली अगली पीढ़ियाँ भी कृतकृत्य हो सकती हैं।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गायत्री तीर्थ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

दिव्यतीर्थ-सन् १९२६ से प्रज्वलित अखण्ड दीप, अखण्ड यज्ञाग्नि, प्रतिदिन करोड़ों गायत्री मंत्रजप, साधना, अनुष्ठान। **अनुपम गुरुकुल-आरण्यक**-हर व्यक्ति की मनोभूमि के अनुरूप जीवन साधना सत्रों का सतत संचालन, **नवयुग की गंगोत्री**- वशिष्ठ, विश्वामित्र, भगीरथ, परशुराम, याज्ञवल्क्य, चरक आदि ऋषियों की परम्परा का विस्तार। **आध्यात्मिक सेनिटोरियम**-प्रत्यक्ष परामर्श एवं पत्राचार द्वारा नित्य हजारों साधकों-परिजनों का मार्गदर्शन।

विचार क्रान्ति अभियान, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

Code No. KD 22

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.